दिवाकर चित्रकथा

भगवान नेमिनाथ

प्राकृत भारती अकादमी

अंक २०
मूल्य १७.००

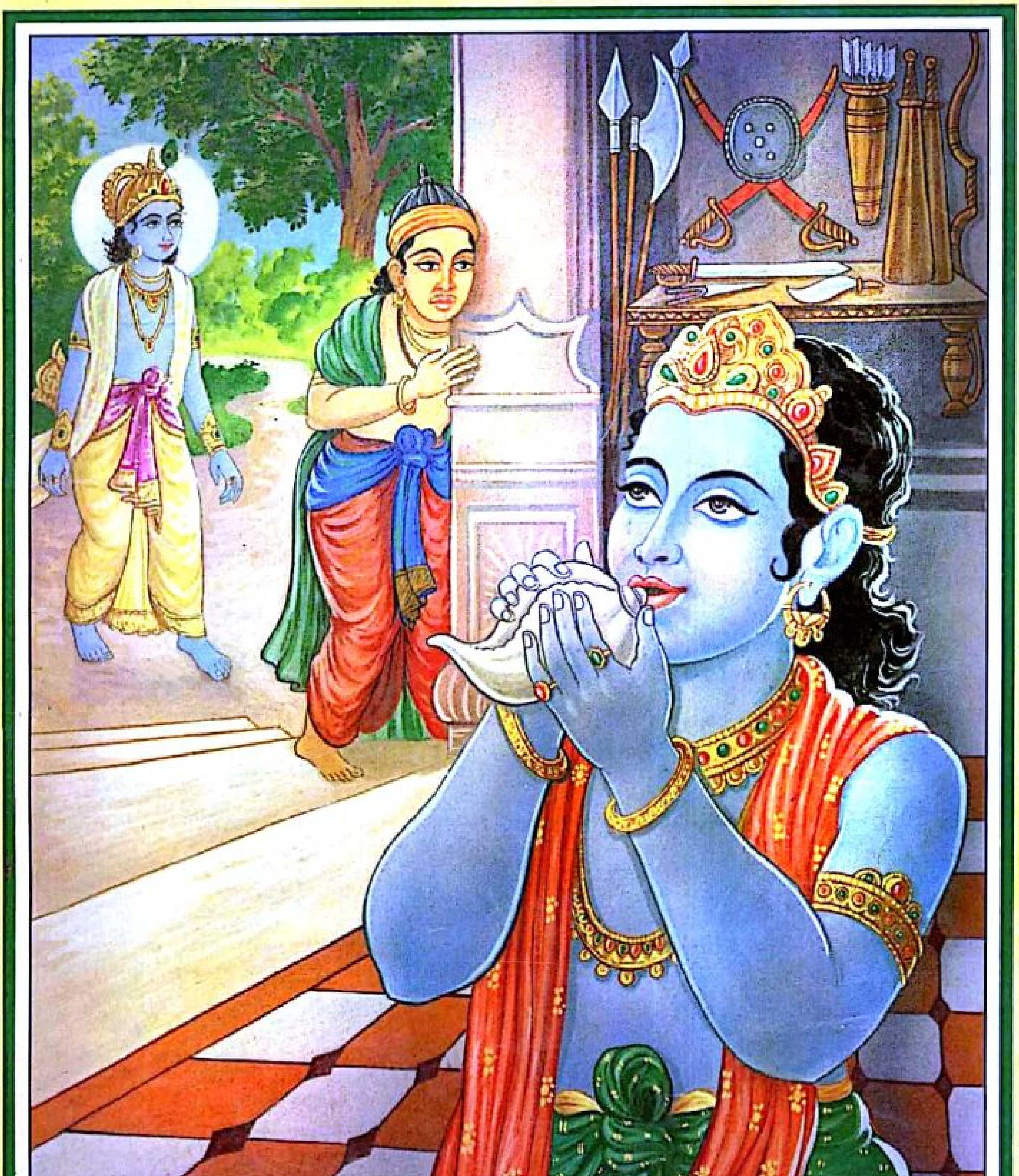

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

भगवान नेमिनाथ

जैन परम्परा के २२वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) का जन्म सोरियपुर के यदुवंशी राजा समुद्रविजय जी की महारानी शिवादेवी की कुक्षि से हुआ। वासुदेव श्रीकृष्ण का जन्म समुद्रविजय के छोटे भाई राजा वसुदेव जी की रानी देवकी के गर्भ से हुआ और वसुदेव जी की बड़ी रानी रोहिणी ने बलदेव (बलराम) को जन्म दिया। इस प्रकार यदुवंश में एक ही युग में तीन महापुरुषों ने जन्म लेकर अपने अद्‌भुत लोकोत्तर कृतित्व से हरिवंश को तो गौरव मण्डित किया ही सम्पूर्ण भारतीय जन-जीवन को भी धर्मानुप्राणित कर दिया।

भगवान नेमिनाथ जहाँ अद्‌भुत पराक्रमशाली एवं शौर्य-तेज के पुँज थे वहीं परम करुणामूर्ति भी थे। उनका जीवन सांसारिक मोह एवं विकारों से निर्लेप कमल के समान पवित्र था। तो करुणा व अहिंसा की शीतलवाहिनी गंगा के समान लोक-कल्याणकारी भी था। शासक यादव जाति को शिकार व मौंस-मदिरा सेवन के दुर्व्यसनों से मुक्त कराने और शील-सदाचार की ओर मोड़ने में उनका योगदान चिरस्मरणीय है। केवल वाणी द्वारा ही नहीं, किन्तु अपने आत्म बलिदानी व्यवहार से भी उन्होंने तत्कालीन मानव समाज को जीव-दया व शाकाहार का सन्देश दिया। वासुदेव श्रीकृष्ण उनके इन उपदेशों को यादव जाति व तत्कालीन समाज में प्रचारित करने में विशेष सहयोगी रहे। यही कारण है कि जैन साहित्य के अलावा वैदिक साहित्य में भी भगवान अरिष्टनेमि के उपदेशों व धर्म-प्रचार का प्रशंसात्मक उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में तो उनको अध्यात्म वेद को प्रकट करने वाले सब जीवों का मंगल करने वाले मानकर उनके प्रति यज्ञाहुति समर्पित करने के मंत्र भी हैं। प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. राधाकृष्णन ने उन्हें स्पष्ट ही ऐतिहासिक महापुरुष स्वीकार किया है।

भगवान नेमिनाथ की जीवन घटनाओं का वर्णन जैन आगमों व उत्तरवर्ती टीका ग्रन्थों, चरित्र ग्रन्थों आदि में विस्तार पूर्वक मिलता है। यद्यपि परम्परा भेद के कारण कुछ प्रसंगों के वर्णन में सामान्य-सा अन्तर अवश्य आता है किन्तु उनके अहिंसा-करुणामय जीवन आदर्शों को सभी ने बड़ी श्रद्धा के साथ चित्रित किया है। भगवान नेमिनाथ के साथ राजीमती का चरित्र चित्रण जैन साहित्य में बड़ी रसमय शैली में किया गया है। राजीमती के पवित्र अनुराग में त्याग और बलिदान की, शील और सद्‌विवेक की एक अद्‌भुत प्रेरणा शक्ति भरी हुई है। यहाँ पर संक्षिप्त में भगवान नेमिनाथ के पावन जीवन चरित्र को शब्दांकित किया है आचार्यश्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी के विद्वान शिष्य मुनिश्री पूर्णचन्द्र विजय जी ने।

-महोपाध्याय विनयसागर **-श्रीचन्द सुराना 'सरस'**

Scanned by CamScanner

भगवान नेमिनाथ

यमुना नदी के तट पर सोरियपुर नाम का विशाल नगर था। यहाँ पर हरिवंश के वृष्णि कुल में जन्मे दो राजाओं का राज्य था। सोरियपुर के उत्तर-पूर्व के शासक समुद्रविजय थे जिनकी पटरानी का नाम था शिवादेवी। दक्षिणी-पूर्व भाग पर राजा वसुदेव जी का राज्य था। इनकी दो रानियाँ थीं रोहिणी और देवकी। वसुदेव जी की बड़ी रानी रोहिणी के पुत्र थे बलराम। छोटी रानी देवकी के पुत्र थे श्रीकृष्ण।

यह कहानी श्रीकृष्ण के चचेरे भाई भगवान नेमिनाथ के जीवन-वृत्त पर आधारित है जिन्होंने महान् पुण्य कर्म कर बीस स्थानकों की उपासना करके पिछले जन्म में तीर्थंकर गोत्र कर्म का बन्ध किया और स्वर्ग में अपराजित विमान में देव बनें।

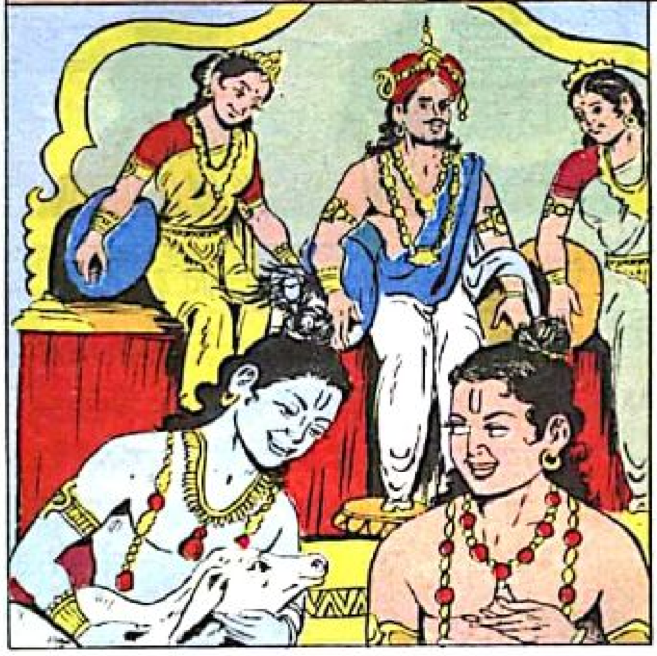

एक दिन स्वर्ग के सबसे ऊँचे अपराजित देव विमान में इस महान् पुण्यात्मा देव का आसन डोलने लगा। उन्होंने भविष्य के गर्भ में देखा—

माता शिवादेवी महलों में सोयी हुई थीं। कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी की मध्यरात्रि में स्वर्ग से प्रयाण कर देव की भव्य आत्मा माता शिवादेवी के गर्भ में अवतरित हुई। एक साथ अनेक दिव्य स्वप्न उनकी आँखों में तैरने लगे। हाथी, सिंह आदि एक-एक करके १४ स्वप्न माता को दिखाई दिये। वे नींद से उठकर सोचने लगीं—

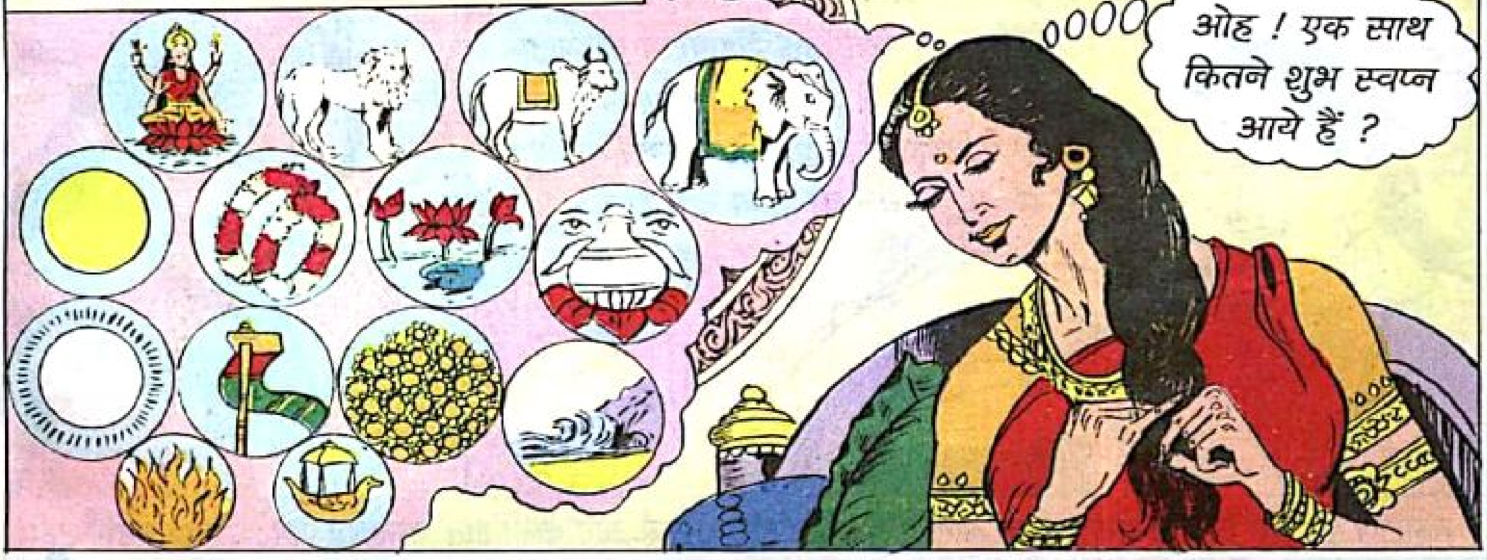

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

एक आचार्य का कहना है, बालक का नाम इन्द्र ने 'नेमिकुमार' रखा, वे अरियों-शत्रुओं को भी प्यारे इष्ट लगते थे इसलिए उनका नाम अरि-इष्ट अरिष्ट प्रसिद्ध हो गया।

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

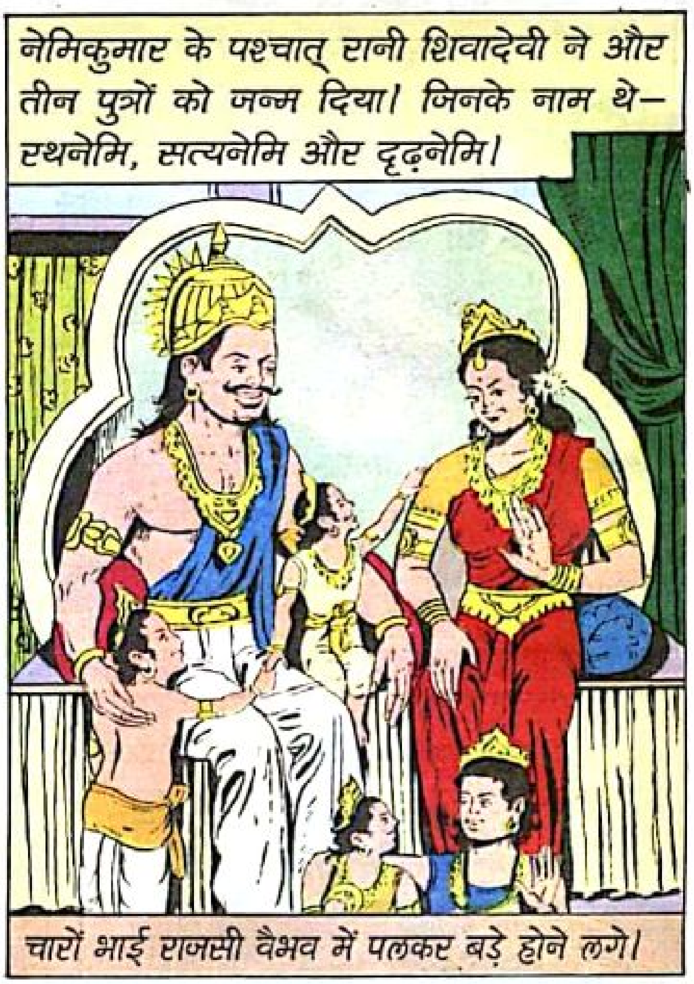

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

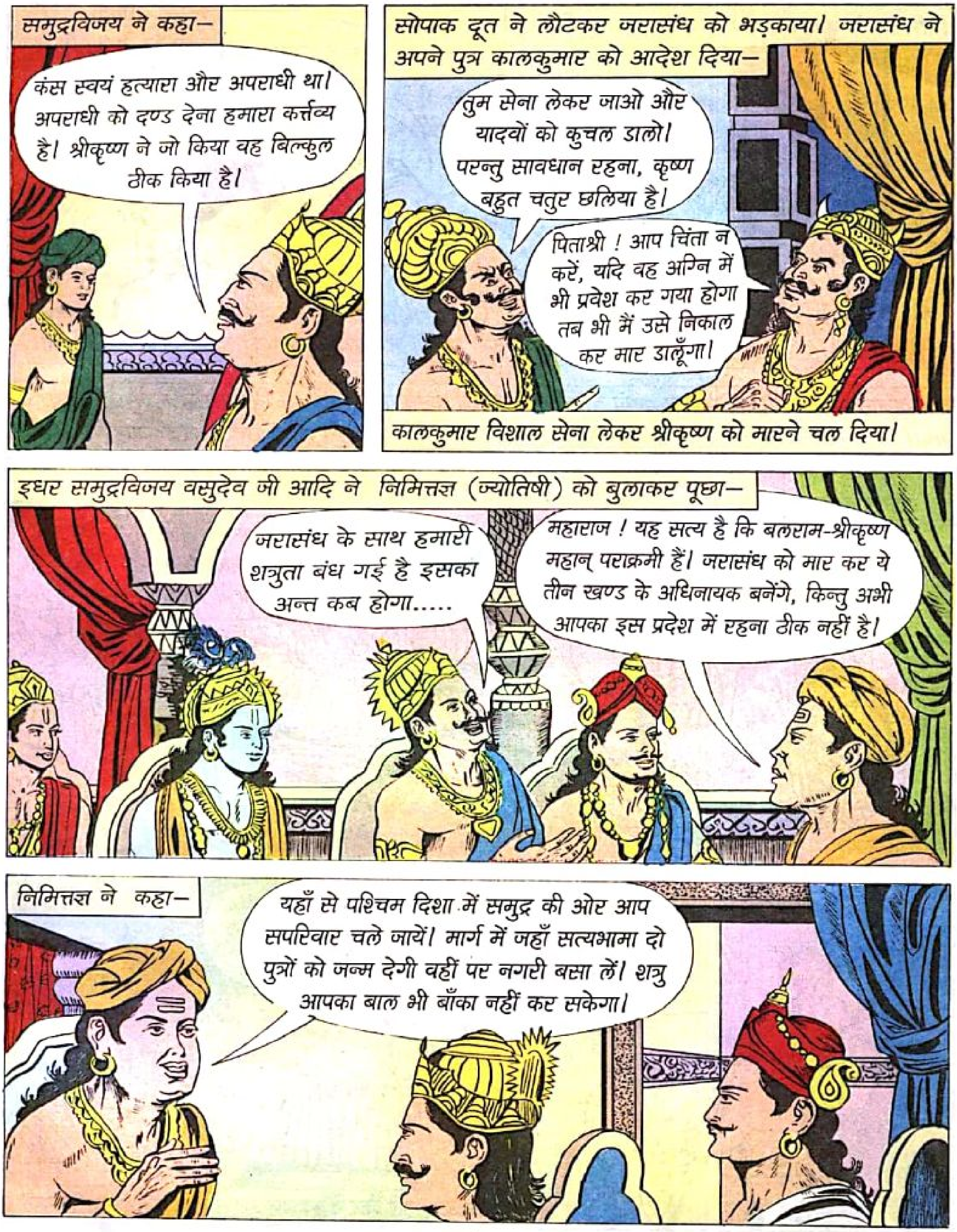

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

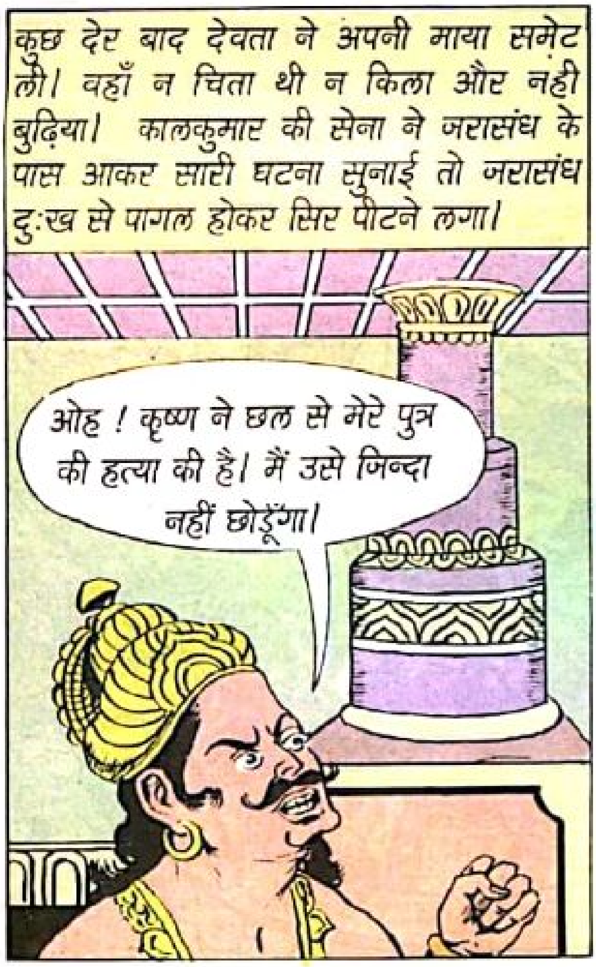

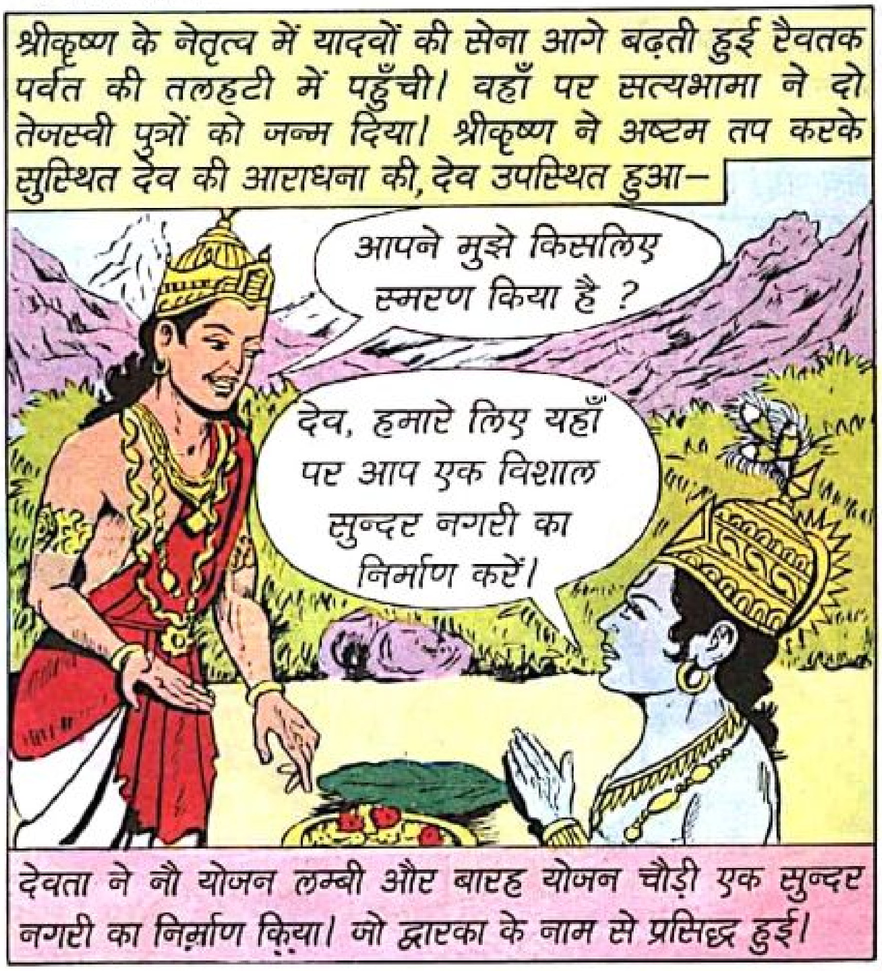

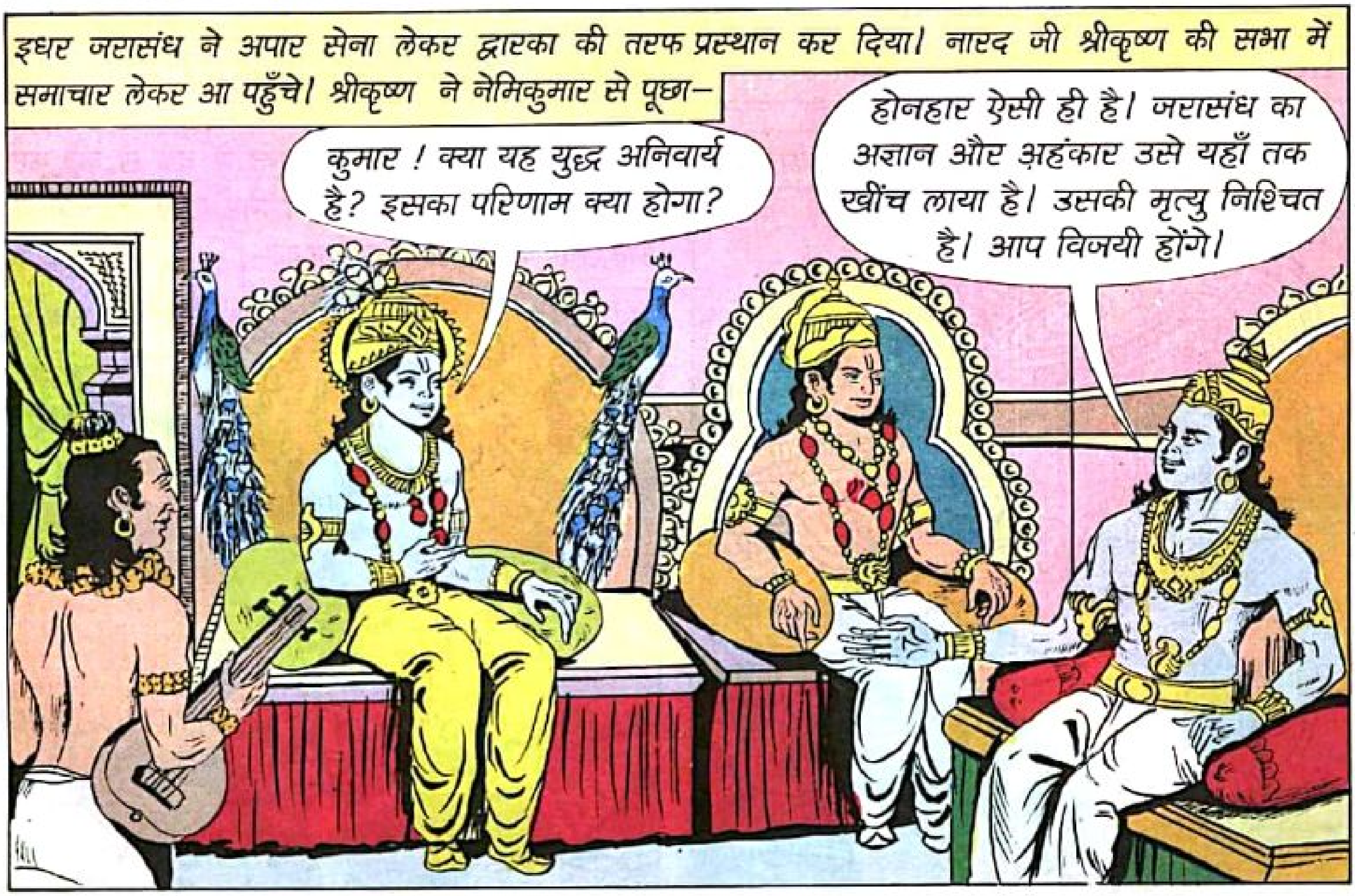

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

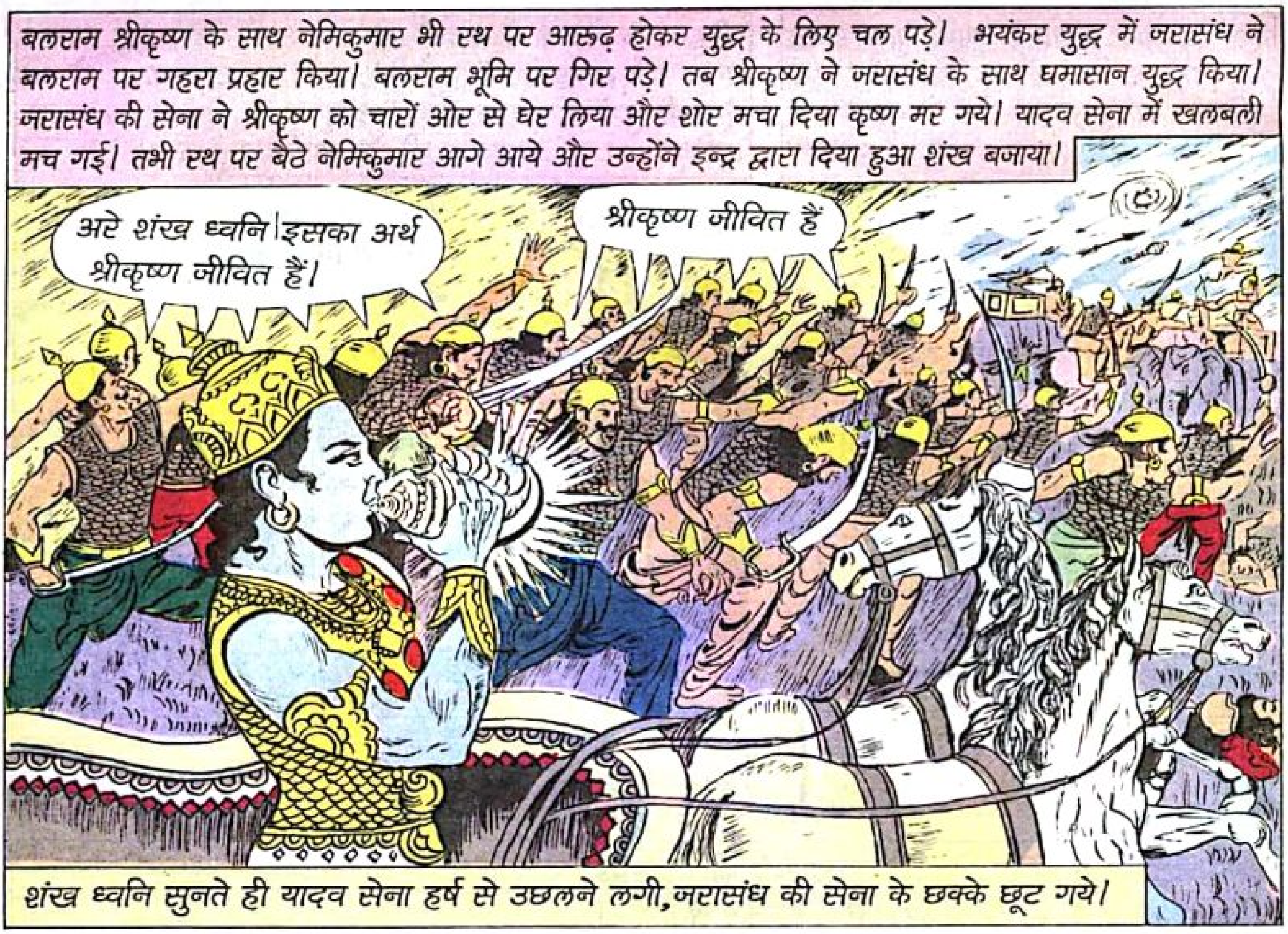

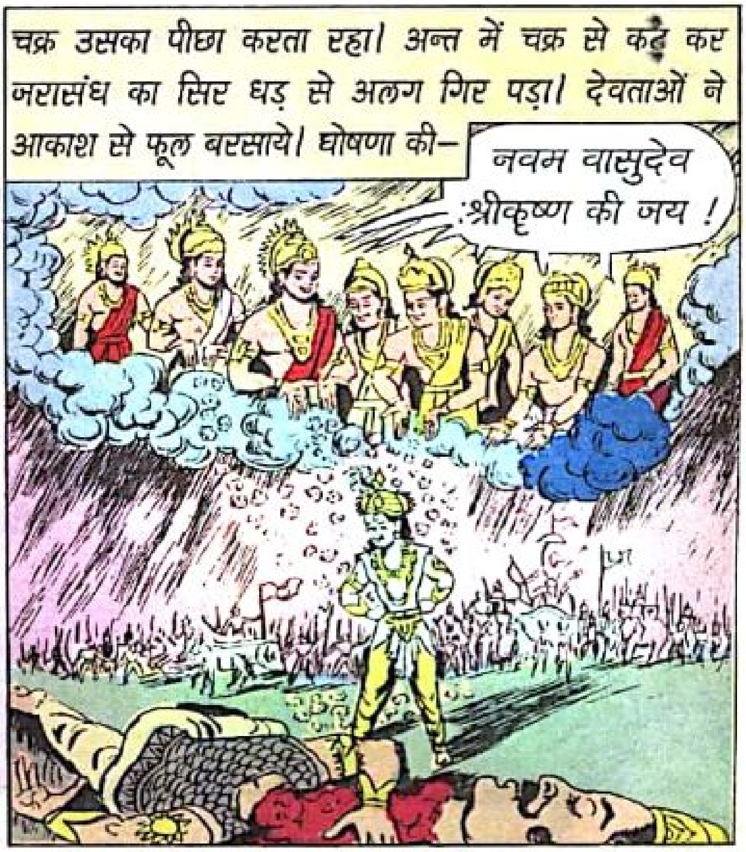

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

जरा विद्या का विनाश और शंखेश्वर महातीर्थ की उत्पत्ति

जरासंध के साथ युद्ध में भगवान नेमिनाथ ने जब शंखध्वनि की तो जरासंध की सेना के छक्के छूट गये। वहीं यादव सेना में हर्ष और उल्लास का संचार हो गया। इस प्रसंग के साथ कुछ प्राचीन चरित्रों में एक महत्त्वपूर्ण घटना का भी वर्णन है जो इस प्रकार है–

जरासंध ने यादव सेना को जीतने के लिए उस पर जरा नामक दुष्ट विद्या छोड़ी। जिसके दुष्प्रभाव से यादव सैनिक मूर्च्छित और जरा-जीर्ण होकर निस्तेज हो गये। श्रीकृष्ण ने यह देखा तो चिंतित हुए। श्री नेमिकुमार के निर्देशानुसार अट्ठम तप किया तब भगवान पार्श्वनाथ की एक दिव्य मूर्ति पाताल से प्रगट हुई। माता पद्मावती ने दर्शन देकर बताया–"अतीत की चौबीसी में दामोदर नामक नवम तीर्थंकर के समय में अषाढ़ी नामक श्रावक ने यह मूर्ति भराई थी, इस मूर्ति का स्नात्र-प्रक्षाल जल सेना पर छिटकाव करो।" पद्मावती देवी के कथनानुसार श्रीकृष्ण ने मूर्ति का स्नात्र-प्रक्षाल जल सेना पर छिटका तो दुष्ट जरा विद्या का दुष्प्रभाव दूर हुआ। सभी सैनिक सज्जित होकर उठे। जरासंध युद्ध में पराजित हो गया। तभी श्रीकृष्ण ने विजय उल्लास में शंख बजाया। तब से उस स्थान पर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित हुई और वह शंखेश्वर तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। शंखेश्वर महातीर्थ की वह मूर्ति आज भी इस दिव्य महिमा से मंडित मानी जाती है।

आधार–आचार्य श्री जिनप्रभ सूरी रचित (१४वीं शताब्दी)
विविध तीर्थ कल्प, पार्श्वनाथ कल्प

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

Jain Education
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

एक बार फागुन का महीना था। श्रीकृष्ण और नेमिकुमार, सत्यभामा, रुक्मिणी आदि रानियों के साथ जल क्रीड़ा करने गये। सरोवर का केसरिया जल पिचकारियों में भरकर सत्यभामा, रुक्मिणी नेमिकुमार के ऊपर उछालने लगी। रानी जाम्बवती और पद्मावती ने फूलों की गेंद बनाकर नेमिकुमार की छाती पर फेंकी। कुमार हँसते हुए बोले–

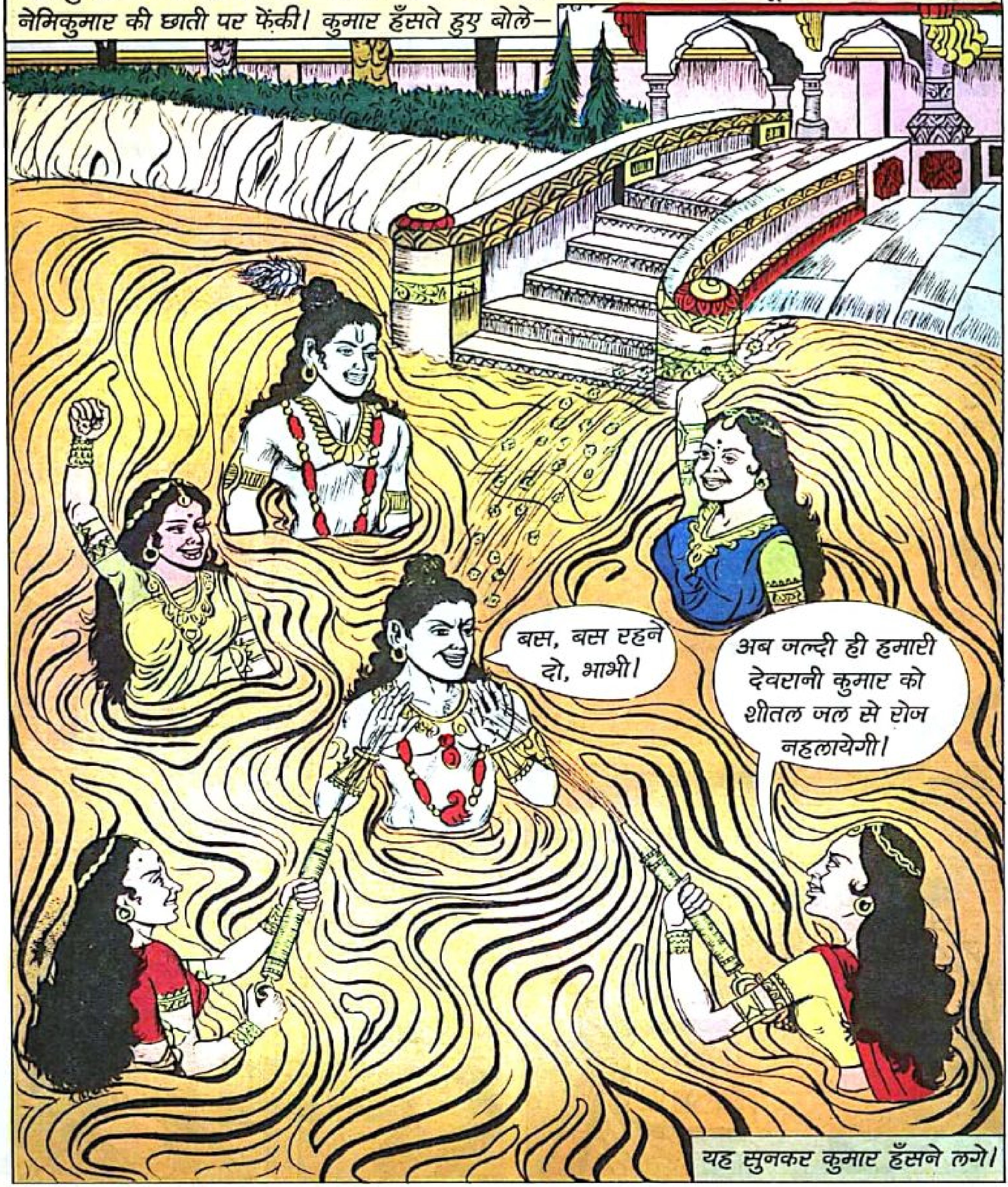

यह सुनकर कुमार हँसने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

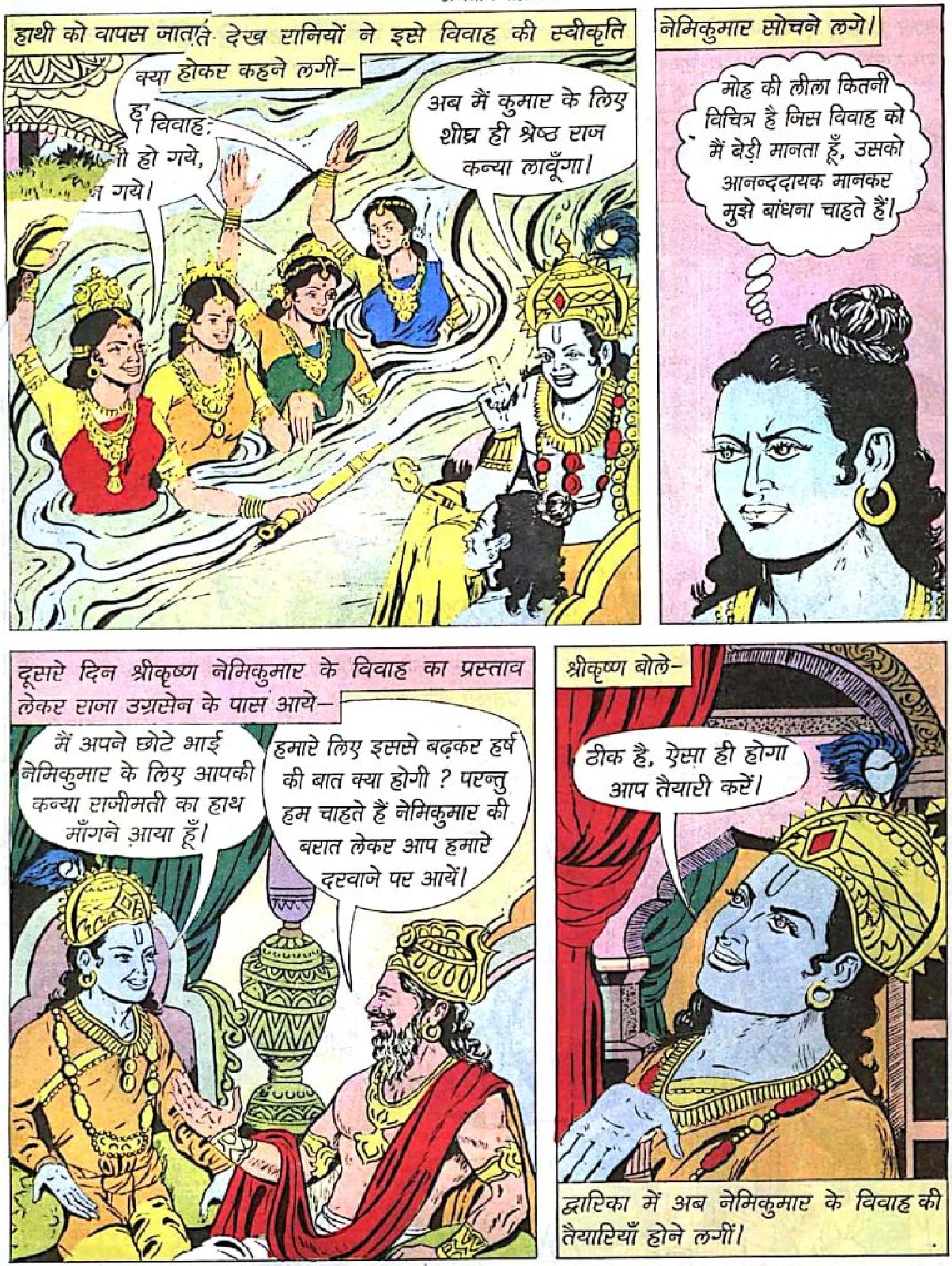

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

आज द्वारिका के घर-घर में मंगल दीप जल रहे थे। तोरणों पर बंदनवारे लटक रहे थे। श्रीकृष्ण वासुदेव के गंधहस्ती पर नेमिकुमार वरराजा बनकर बैठे और पीछे घोड़ों, रथों पर तथा पैदल सैकड़ों यादव चल रहे थे।

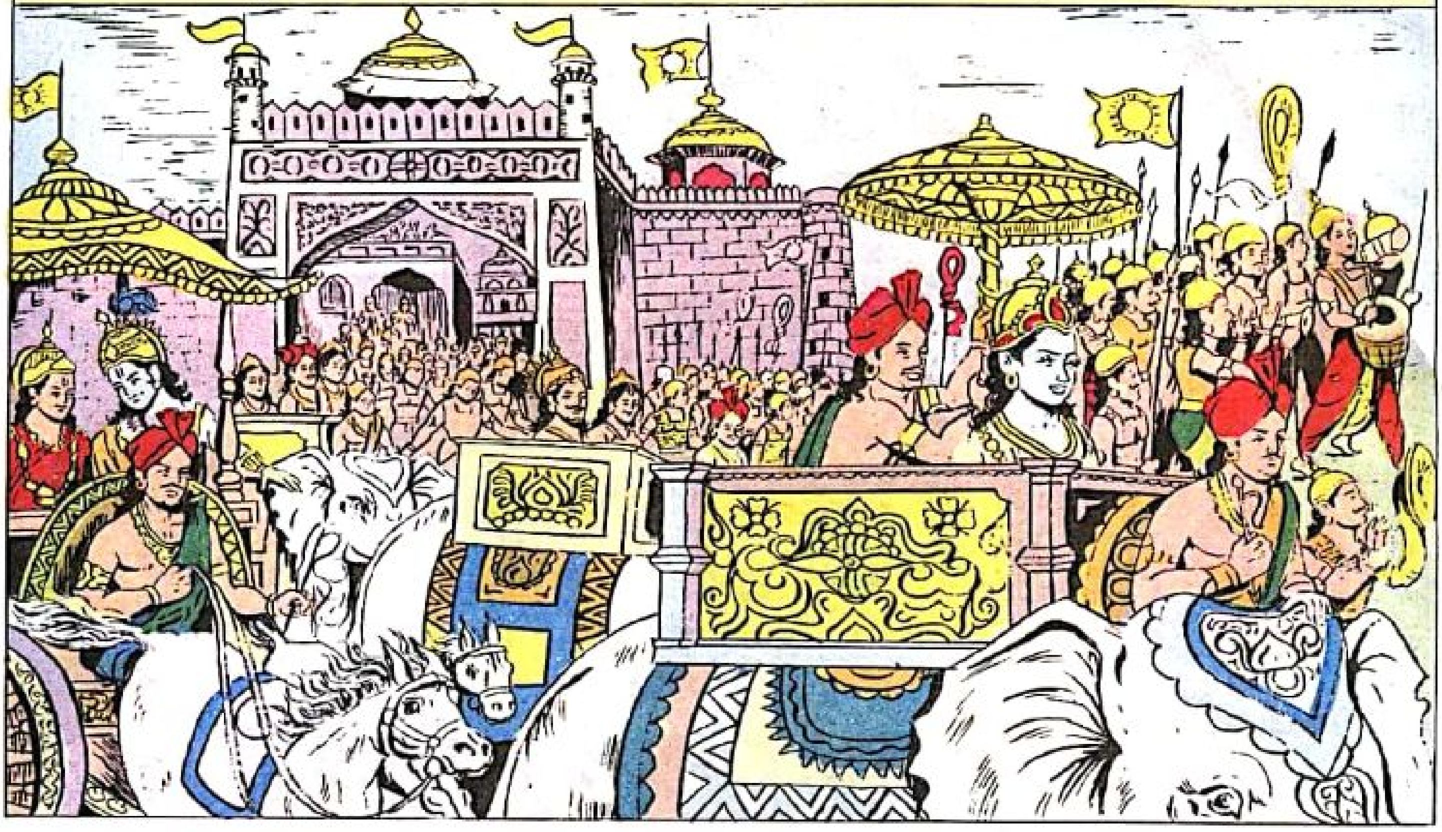

दूर ऊँची पहाड़ी पर विशाल राज भवन की छत पर अनेक महिलाओं से घिरी सजी हुई राजीमती दुल्हन बनकर हाथ में वर माला लिए खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। राजुल की दो सखियाँ नेमिकुमार को देखकर आपस में बातें करने लगीं–

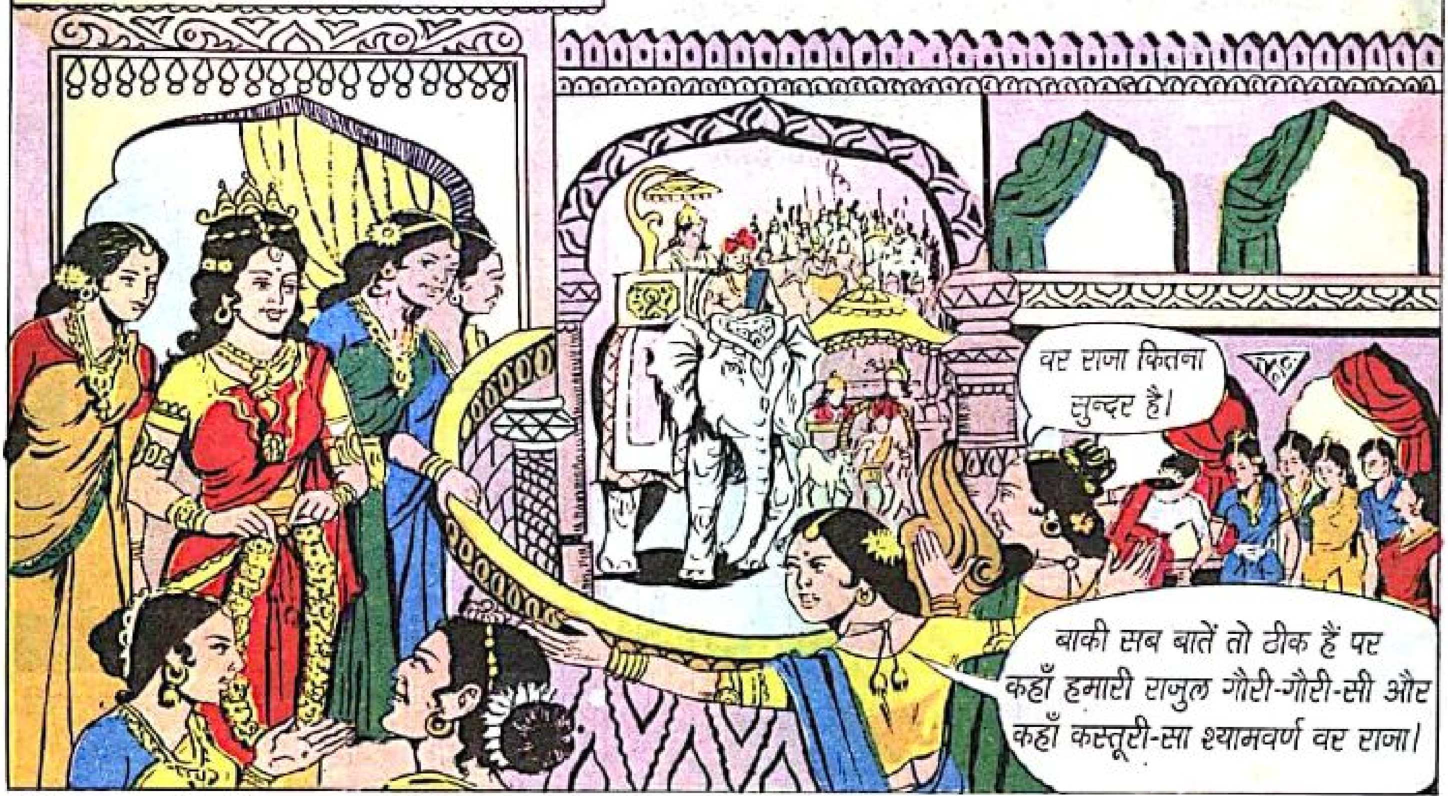

श्री हेमचन्द्राचार्यकृत त्रि. श. पु. च. में नेमिकुमार बारात के रथ में बैठकर चलने का कथन है, किन्तु उत्तराध्ययन सूत्र अ. २२ में वासुदेव के गंध हस्ती पर नेमिकुमार आरूढ़ होने का उल्लेख है। यहाँ पर उसी कथन को मान्य रखा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

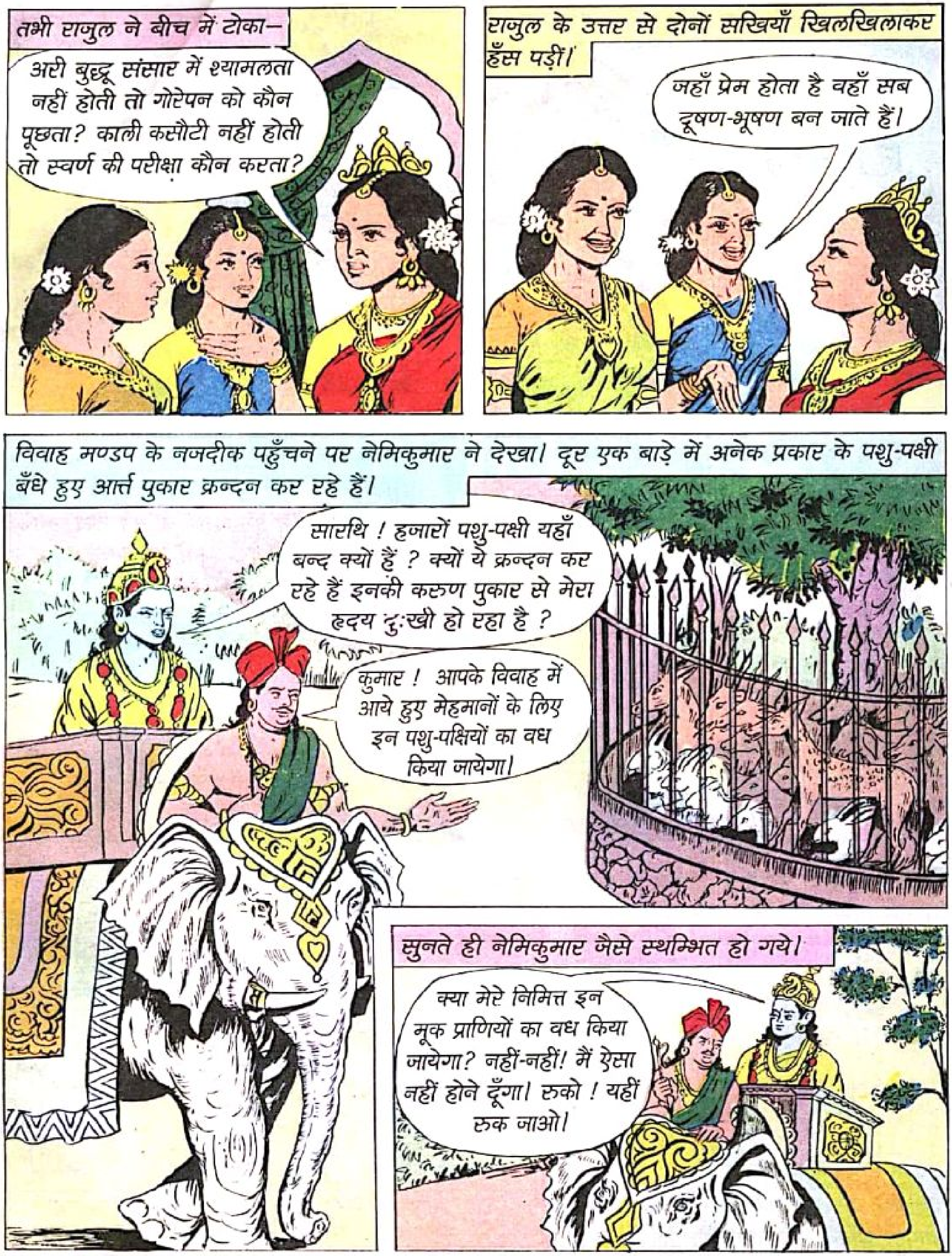

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

सारथि ने हाथी से उतर कर बाड़े का दरवाजा खोल दिया। बंद पशु हिरण, भेड़, बकरियाँ, खरगोश छलाँग मारकर भागने लगे। पशुओं को मुक्त हुआ देखकर नेमिकुमार प्रसन्न हो उठे।

उन्होंने प्रसन्न होकर सारथि को अपने हार, कुंडल आदि आभूषण उतारकर दे दिये और हाथी को वापस द्वारका की तरफ मोड़ लिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

उन्होंने एक वर्ष तक वर्षीदान किया। फिर श्रावण सुदि ६ के दिन दोपहर के बाद हजार पुरुष वाहिनी उत्तराकुरु नामक शिविका (पालकी) में बैठकर रैवतगिरि पर रैवतक उद्यान में पहुँचे। अशोक वृक्ष के नीचे पंच मुष्टि लोचं करके मुनिव्रत स्वीकार किया। नेमिकुमार के साथ ही १ हजार अन्य राजकुमार श्रेष्ठी आदि व्यक्तियों ने भी दीक्षा ग्रहण की। देवराज इन्द्र ने उनके केश स्वर्ण पात्र में ग्रहण किये और उन्हें एक देवदूष्य वस्त्र भेंट किया जिसे भगवान ने अपने कंधे पर रख लिया।

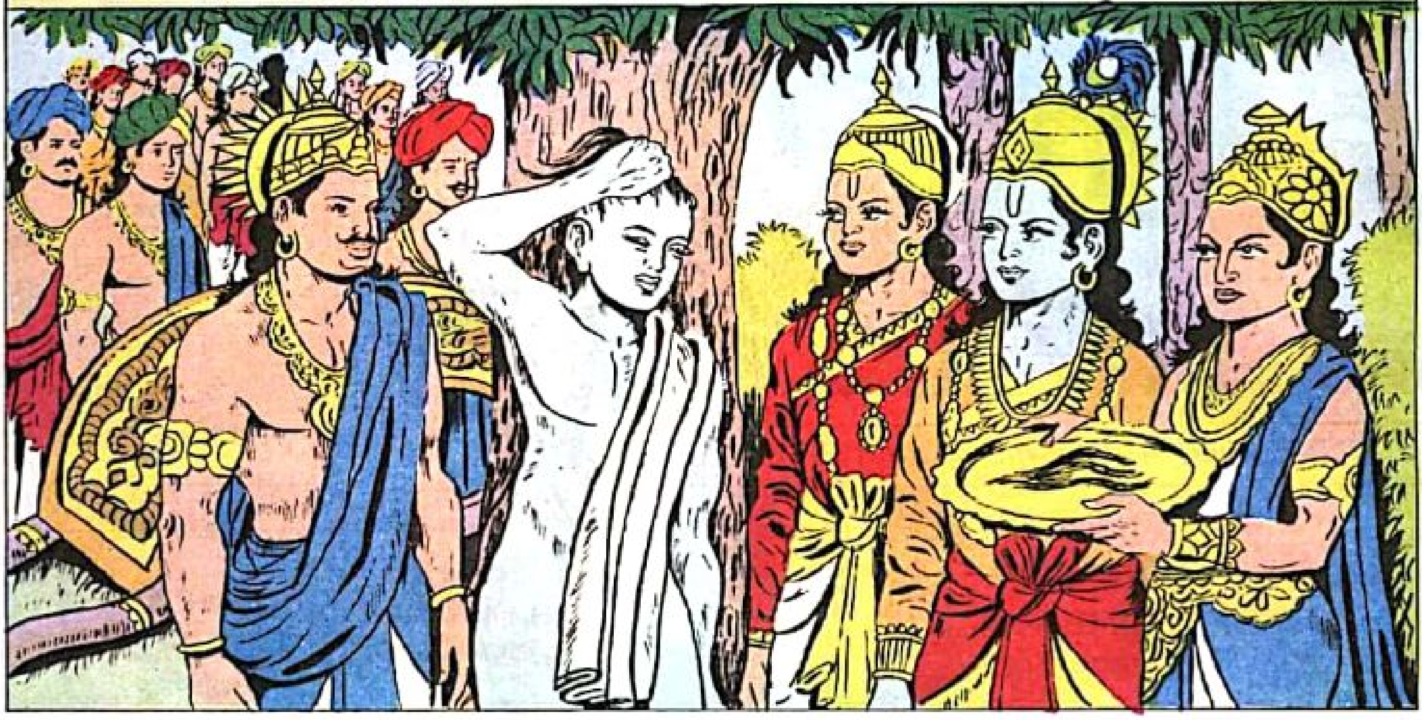

नेमिकुमार ने जैसे ही दीक्षा ग्रहण की उन्हें मन के सूक्ष्म भावों को जानने वाला मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया। समुद्रविजय आदि के साथ वासुदेव श्रीकृष्ण ने नेमि प्रभु की वन्दना की।

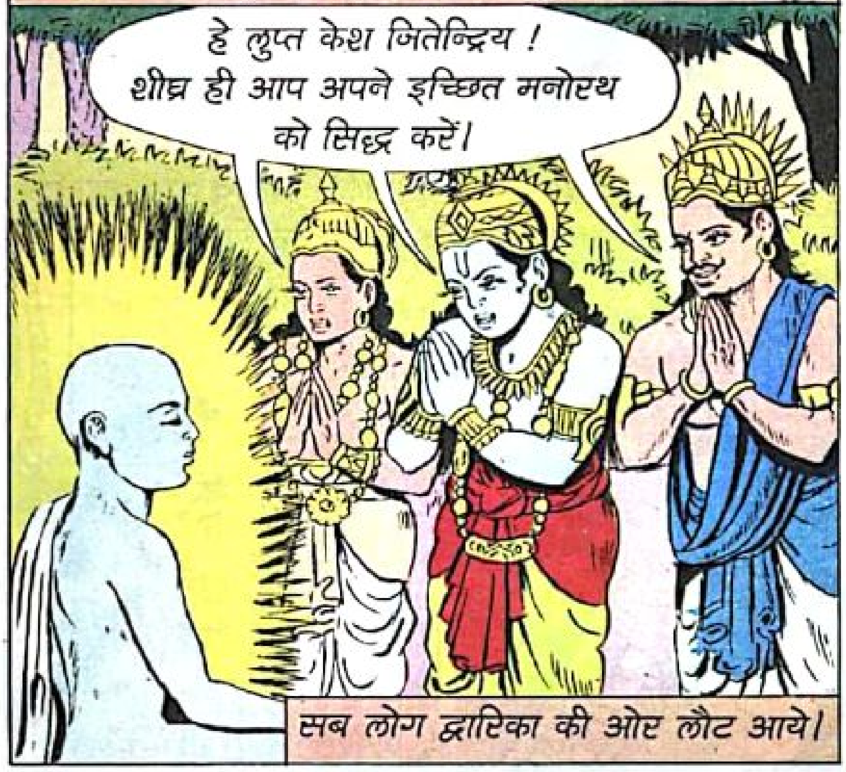

सौराष्ट्र के विविध क्षेत्रों में ध्यान आदि साधना करते हुए चौवन दिन के पश्चात् वे पुनः उसी रैवतगिरि के शिखर पर पधारे।

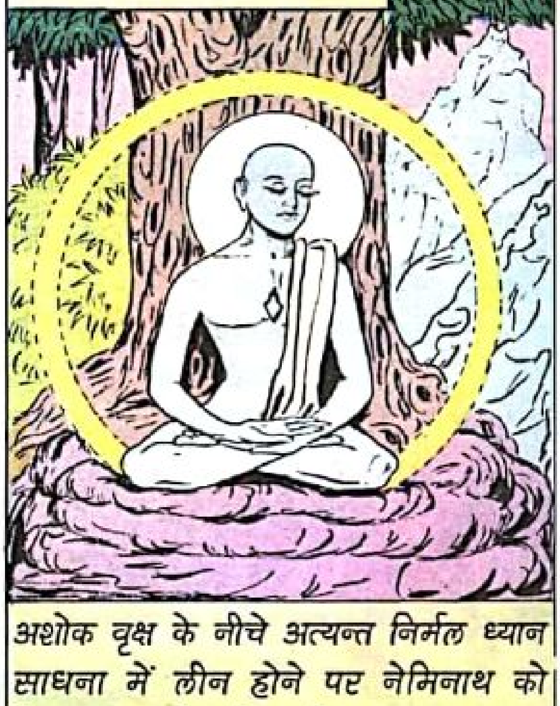

अशोक वृक्ष के नीचे अत्यन्त निर्मल ध्यान साधना में लीन होने पर नेमिनाथ को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

दीक्षा के पश्चात नेमिकुमार नेमिनाथ कहलाये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

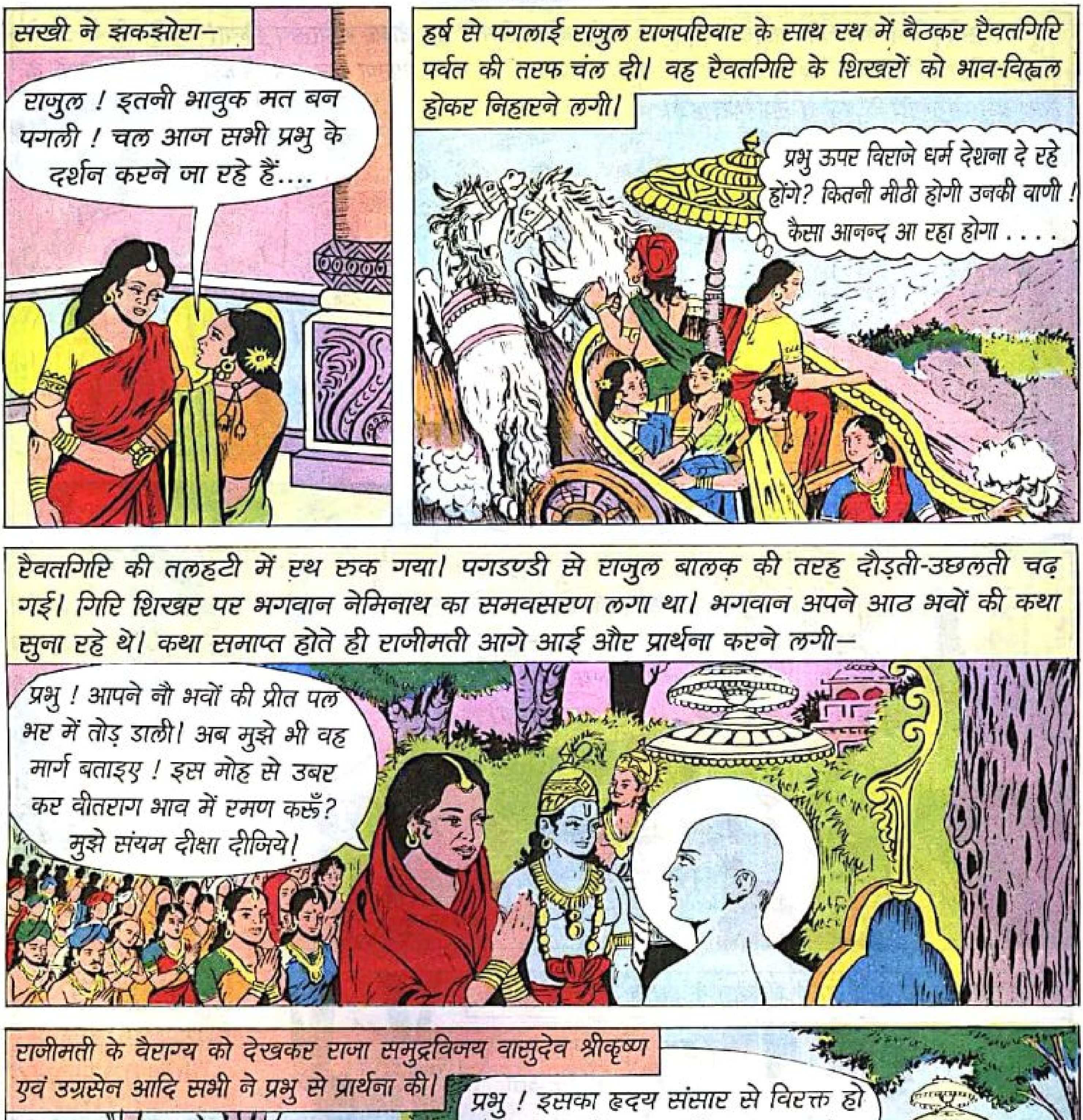

Scanned by CamScanner

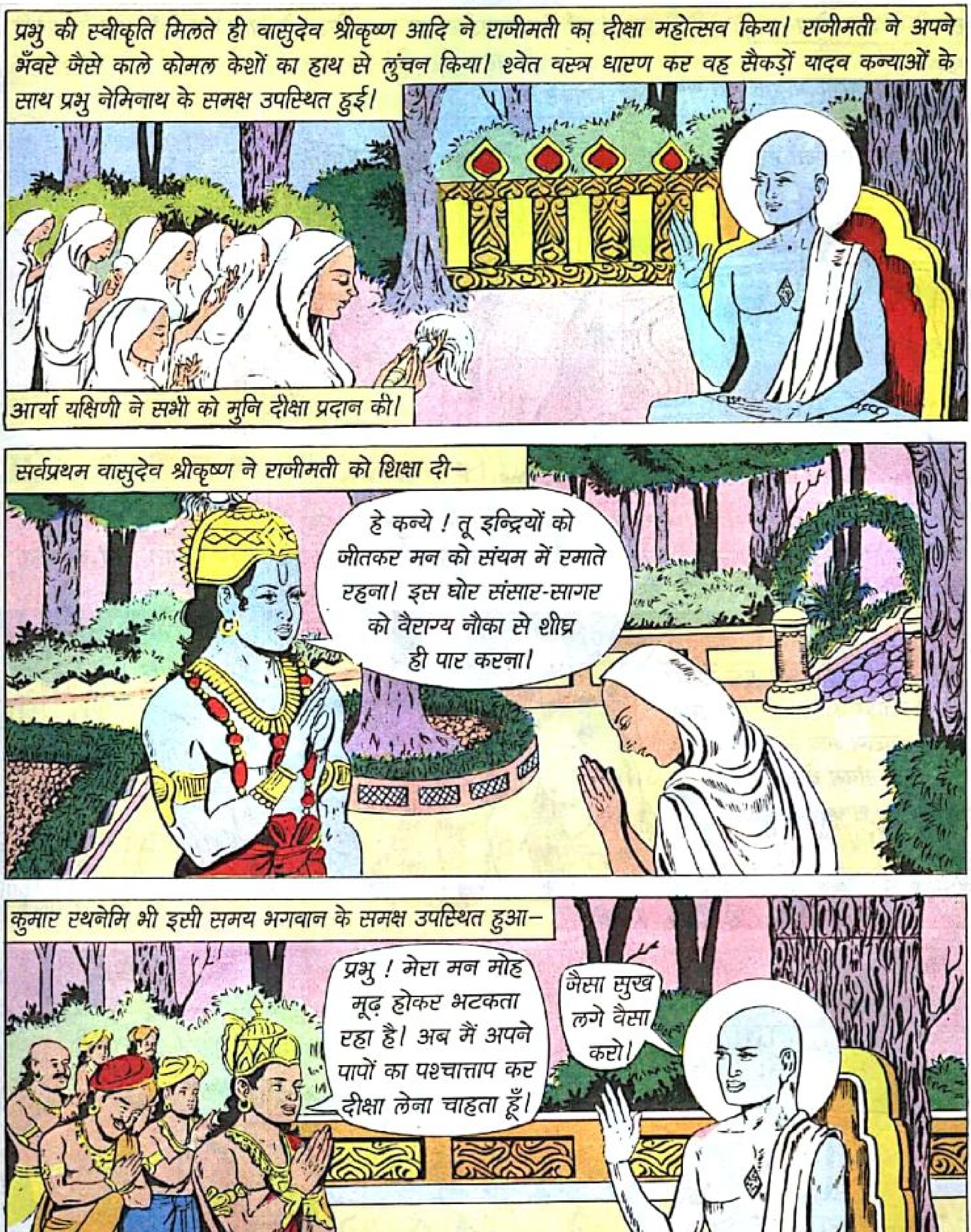

Scanned by CamScanner

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org
Scanned by CamScanner

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

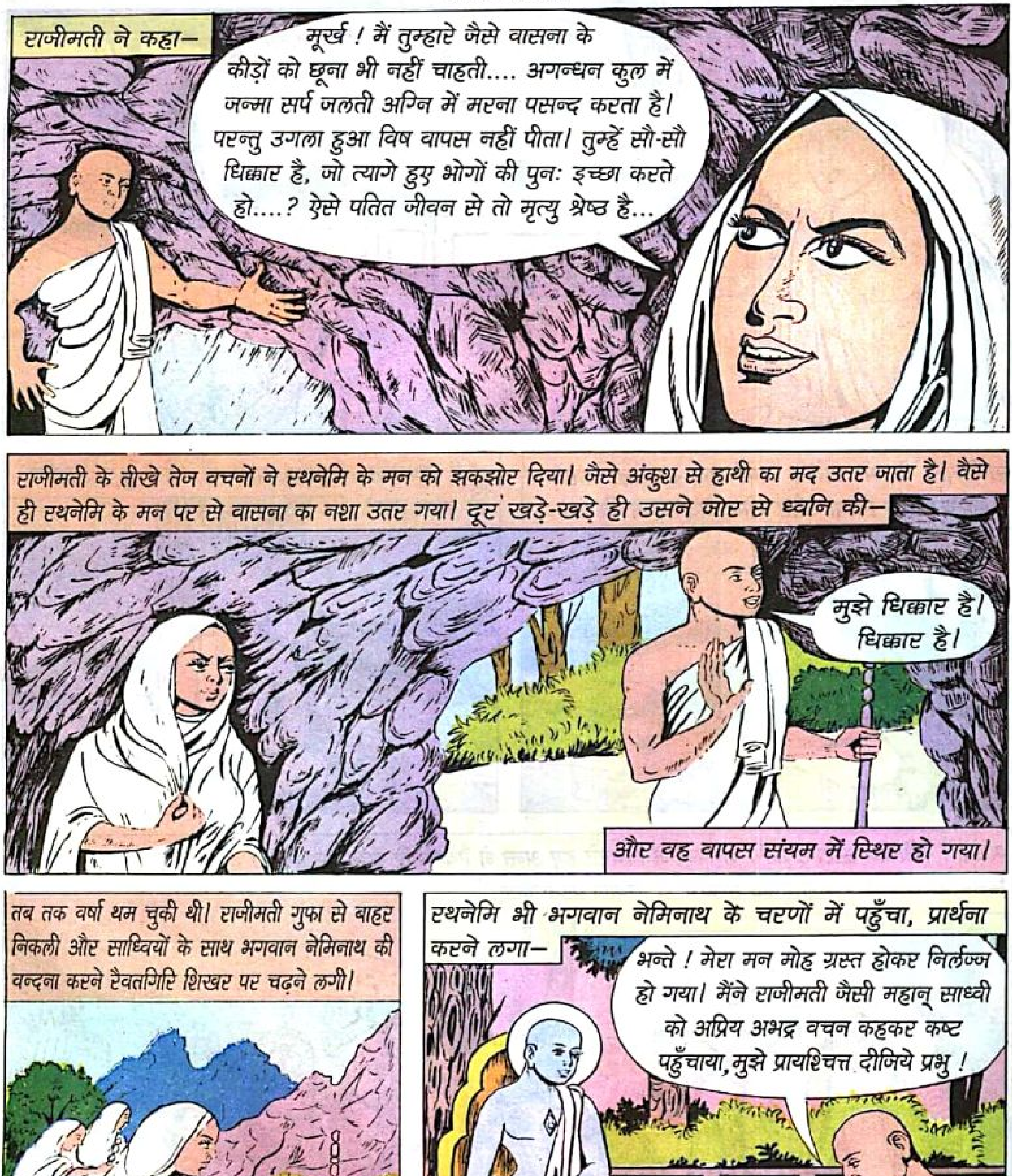

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner

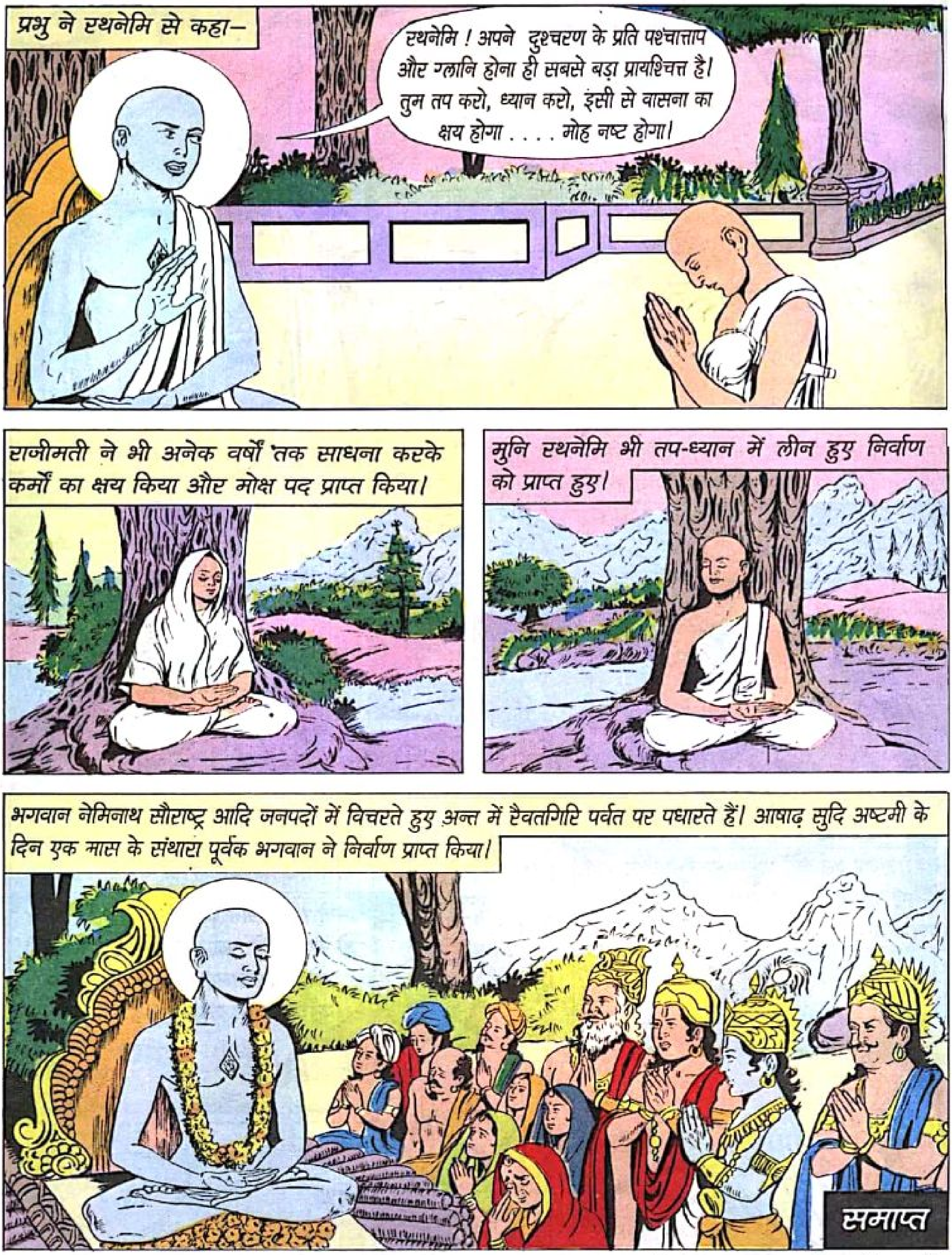

आधार: उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २२ त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र, पर्व ८, सर्ग ९

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

Scanned by CamScanner